Today's Poem – 26.05-2014

गृहस्थ व्यव्हार में रहते ऐसा बनो ट्रस्टी

जो किसी भी चीज़ में ना हो आसक्ति

शरीर से ममत्व टूट जाए

ऐसे बेगर बनो की कुछ भी याद ना आए

अभी ही हमें ड्रामा के आदि मध्य अन्त का ज्ञान है

क्यूंकि बाबा की पहचान है

अब घर वापस जाना है

अपने को अशरीरी आत्मा समझना है

ख़ुशी हमारा स्पेशल खज़ाना

इसे कभी नहीं छोड़ना

मनमनाभव

मध्याजीव भव

मेरा बाबा

ॐ शान्ति !!!